DSSSB TGT संस्कृत

SCHOLAR BATCH

साहित्यदर्पण

काव्य प्रयोजन एवं काव्य लक्षण

LIVE 15-03-2024 11:00 AM

पितामह :- नारायणदास
पिता :- चन्द्रशेखर
:- विश्वनाथ
पुत्र :- अनन्तदास
जन्मस्थान :- कलिङ्ग (उड़ीसा)

सामान्य परिचय

- साहित्यदर्पण साहित्य शास्त्र का लाक्षणिक ग्रन्थ है ।
- इसके प्रणेता कविराज विश्वनाथ हैं ।
- इनका समय १४ वीं शताब्दी ईसवी है ।
- विश्वनाथ रस सिद्धान्त के अनुयायी आचार्य हैं ।
- इसका विभाजन 10 परिच्छेदों में है।
- विश्वनाथ ने अपने पूर्ववर्ती मम्मट, कुन्तक, भोज, वामन इत्यादि के काव्य लक्षणों का खण्डन करके रसात्मक वाक्य को काव्य कहा है ।

साहित्यदर्पण का संक्षिप्त परिचय

- साहित्य दर्पण 10 परिच्छेदों में विभक्त हैः
- प्रथम परिच्छेद में काव्य प्रयोजन, लक्षण आदि प्रस्तुत करते हुए ग्रंथकार ने मम्मट, कुन्तक, भोजराज इत्यादि के काव्य लक्षणों "तददोषौ शब्दार्थों सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि" इत्यादि का खंडन किया है और अपने द्वारा प्रस्तुत लक्षण "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" को ही शुद्धतम काव्य लक्षण प्रतिपादित किया है।
- द्वितीय परिच्छेद में वाच्य और पद का लक्षण कहने के बाद शब्द की शक्तियों - अभिधा, लक्षणा, तथा व्यंजना का विवेचन और वर्गीकरण किया गया है।

- तृतीय परिच्छेद में रस - निष्पत्ति का विवेचन है और रसनिरूपण के साथ-साथ इसी परिच्छेद में नायक-नायिका- भेद पर भी विचार किया गया है।
- चतुर्थ परिच्छेद में काव्य के भेद ध्वनिकाव्य और गुणीभूत- व्यंग्यकाव्य आदि का विवेचन है।
- पञ्चम परिच्छेद में ध्वनि - सिद्धान्त के विरोधी सभी मतों का तर्कपूर्ण खण्डन और इसका समर्थन है।

भरतमुनि

- छठें परिच्छेद में नाट्यशास्त्र से संबन्धित विषयों का प्रतिपादन है। यह परिच्छेद सबसे बड़ा है और इसमें लगभग 300 कारिकाएँ हैं, जबकि सम्पूर्ण ग्रंथ की कारिका संख्या 760 है।

- सप्तम परिच्छेद में दोष निरूपण ।
- अष्टम परिच्छेद में तीन गुणों का विवेचन।
- नवम परिच्छेद में वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली आदि रीतियों पर विचार किया गया है।
- दशम परिच्छेद में अलंकारों का सोदाहरण निरूपण है जिनमें 12 शब्दालंकार, 70 अर्थालंकार और रसवत् आदि कुल 89 अलंकार परिगणित हैं।

साहित्यदर्पण की टीकाएँ

- साहित्यदर्पणलोचनटीका - अनन्तदास (विश्वनाथ के पुत्र)
- विज्ञप्रियाटीका - महेश्वर ।
- विमला टीका - जीवानन्दविद्यासागर ।
- लक्ष्मी टीका - कृष्णमोहन ।
- कला टीका- लोकमणिदाहाल ।

साहित्यदर्पणः प्रथमः परिच्छेदः

ग्रन्थारम्भे निर्विघ्नेन प्रारिप्सितपरिसमाप्तिकामो वाङ्मयाधिकृततया वाग्देवतायाः सांमुख्यमाधत्ते-

(साहित्यदर्पण के रचयिता कविराज विश्वनाथ) अपने ग्रन्थ (साहित्यदर्पण) की निर्विघ्नसमाप्ति की कामना से, ग्रन्थारम्भ के पहले, वाङ्मय की एकमात्र अधिकारिणी भगवती वाग्देवी की दया - दीक्षा का ध्यान कर रहे हैं-

शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरां देवी ।
अपहृत्यतमः सन्ततमर्थानखिलान्प्रकाशयतु ।।] ॥

शरच्चन्द्र की कान्ति से भी बढ़ी चढ़ी कान्ति वाली, वह वाग्देवी सरस्वती हमारे हृदय का अज्ञानान्धकार दूर करती रहें और उसमें समस्त अर्थ - तत्त्वों को अवभासित करती रहें।

(काव्य - प्रयोजन : पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति)

धर्म अर्थ काम मोक्ष

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि ।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ॥ 2 ॥

चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो 'रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्' इत्यादि कृत्याकृत्यप्रवृत्तिनिवृत्त्युपदेशद्वारेण सुप्रतीतैव ।

करने योग्य   न करने योग्य

काव्य - लक्षण :- 'काव्यशास्त्र' की विवेचना के क्रम में सबसे पहले हमारी दृष्टि जाती है काव्य के लक्षणों पर । 'काव्य के लक्षण' को निर्धारित करने के प्रयास विभिन्न कालों में हुए। सबसे पहले यह समझने का प्रयास किया जाय कि 'काव्य-लक्षण' में 'लक्षण' पद का क्या अर्थ है ? 'लक्षण' शब्द की परिभाषा इस तरह निर्धारित की जा सकती है, 'लक्षण' लक्ष्यभूत पदार्थ की कोई ऐसी विशेषता है, जिसमें अव्याप्ति या अतिव्याप्ति दोष न हो, साथ ही जो नामोल्लेख इत्यादि व्यवहार-साधक उपायों से अलग हो ।' इन्हीं तथ्यों पर विचार करते हुए विभिन्न आचार्यों ने अपने-अपने काव्य लक्षण निर्धारित किए हैं।

काव्य- हेतु :- 'काव्य-हेतु' किसी कवि की वह शक्ति है, जिससे वह काव्य सृजन करता है। 'अभ्यास' को सभी आचार्यों ने किसी-न-किसी रूप में काव्य-हेतु माना है ।

काव्य - प्रयोजन :- 'काव्य-प्रयोजन' का अर्थ है, काव्य-रचना से प्राप्त फल, उदाहरण के लिए – यश, धन, आनन्द आदि।

काव्य एवं काव्य प्रयोजन

काव्य कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है और यह चित्रण इतना ठीक है कि उसके जैसी ही भावनाएँ दूसरे के हृदय में आविर्भूत हो जाती है। पदों के स्थापना अथवा वर्णन मात्र से ही जो मन को चुरा ले अर्थात् मन को मोहित कर ले वही काव्य है ।

साहित्यदर्पण के अनुसार काव्य - प्रयोजन

प्रत्येक कार्य का कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है। बिना प्रयोजन के तो अल्प बुद्धि वाला मनुष्य भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है अतः कहते हैं

"प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते " ।

वस्तुतः काव्य के प्रयोजन का उल्लेख जनसामान्य को काव्य के निर्माण और अध्ययन तथा अध्यापन में प्रवृत्त कराने के लिए एक रोचक उपाय है। काव्य का प्रयोजन भी रसास्वादमूलक आनन्दातिशय ही है । यद्यपि कीर्ति, व्यवहार का ज्ञान, अर्थोपार्जन तथा अमंगल - विनाश इत्यादि बहुत सारे काव्य के प्रयोजन हैं फिर भी रसास्वादन ही काव्य का प्रमुख प्रयोजन है, यद्यपि कीर्ति इत्यादि काव्य के गौण प्रयोजनों को प्राप्त करने के अन्य साधन भी हैं तथापि रसास्वाद जैसे परम प्रयोजन को प्राप्त करने का एकमात्र एवं सरल साधन काव्य ही है।

काव्य-प्रयोजन-

अस्य ग्रन्थरस्य काव्याङ्गतया काव्यफलैरेव फलवत्त्वमिति काव्यफलान्याह -

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि ।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ।

इस ग्रन्थ अर्थात् साहित्यदर्पण के काव्य का अंग होने के कारण काव्य फल से ही इस ग्रन्थ की फलवत्ता है अतः काव्य के फलों अर्थात् प्रयोजन को बताते हैं । जैसे किसी वृक्ष का वृक्षत्व तभी सार्थक अर्थात् फलवान् है जब उसमें फल लगे हों। वैसे ही साहित्यदर्पण नामक ग्रन्थ एक वृक्ष विशेष है, इसकी शाखाएँ काव्य हैं, जैसे

शखाओं के होने से वृक्ष का अस्तित्व है, वैसे ही काव्य के फल से ही इस ग्रन्थ की सफलता सिद्ध है ।

अर्थात् काव्य से सुकुमार बुद्धि से युक्त लोगों को भी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थो फल की प्राप्ति हो जाती है। काव्य से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के फल की प्राप्ति होती है । काव्य के पढ़ने अथवा सुनने से अनायास ही अर्थात् सरलता से ही जिनकी बुद्धि अल्प है उनको भी चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है ।

वस्तुतः धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष ये चार वर्ग कहलाते है, यही पुरुषार्थ चतुष्टय कहलाते हैं । जो परिपक्व बुद्धि से युक्त है अर्थात् शास्त्रादि ज्ञान में निपुण है ऐसे व्यक्तियों को भी सहजता और सरलता से पुरुषार्थचतुष्टय के फल की प्राप्ति जिससे हो वही काव्य का मुख्य प्रयोजन है ।

चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो "रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्" इत्यादि कृत्याकृ त्यप्रवृत्तिनिवृत्त्युपदेषद्वारेण सुप्रतीतैव ।

उक्तं च (भामहेन) –

"धर्मार्थकाममोक्षेसु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्' ।। इति

की तरह नहीं इस उपदेश के कृत्य अर्थात् धर्मदिरूप कर्त्तव्य कर्म में प्रवृत्ति और अकृत्य अर्थात् अधर्मादिरूप अकर्त्तव्य अकर्म की ओर से निवृत्ति इस उपदेश के द्वारा सर्वविदित है ।

वस्तुतः काव्य धर्म का ही उपदेश देता है अधर्म का नहीं । जैसे राम ने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य किया और वन में गये तथा रावण ने राम की स्त्री सीता का अपहरण करके "परदारापहरण" जैसा महापातक किया । धर्म के रास्ते पर चलने वालों की हमेशा विजय होती है और अधर्म के रास्ते पर चलने वालों की हमेशा पराजय | धर्म से ही राम का अभ्युदय हुआ, अधर्म से रावण का अनभ्युदय हुआ अतः काव्य हमेशा धर्म की ही शिक्षा प्रदान करता है

आचार्य भामह कहते हैं -

सरल एवं सुन्दर काव्य की रचना धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को प्रदान करती है एवं कलाओं अर्थात् नृत्य, गीत इत्यादि 64 प्रकार की कलाओं में निपुणता अर्थात् विशिष्टज्ञान प्रदान करती है और कीर्ति को बढ़ाती है तथा परमानन्द को भी प्रदान करती है।

वस्तुतः काव्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष प्रदान करता है, कलाओं में विशिष्टज्ञान प्रदान करता है, कीर्ति अर्थात् यश को चारों तरफ फैलाता है तथा परमानन्द को भी प्रदान करता है । यही बात कविराज विश्वनाथ ने भी कही है, उन्हीं की बात का समर्थन करते हुए आचार्य भामह भी यही कह रहे हैं ।

धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष की प्राप्ति काव्य से कैसे होती है, यह विचार करते हैं-